ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

प्राचीन बंदिशीय स्वरूप के रूप में आक्षिप्तिका का विश्लेषण

Analysis of Akshiptika As An Ancient Compositional Form

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

शिप्रा पन्त
विभागाध्यक्षा,
संगीत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

हिन्दुस्तानी संगीत–कला पारम्परिक बन्दिशों की सहायता से अब तक जीवित रह पाई है। अच्छी और राग के स्वरूप को ठीक से प्रदर्शित करने वाली बन्दिश को बनाने के लिए भी पारम्परिक बन्दिशों की आवश्यकता होती है। संगीत की पारम्परिक कला हमें गेय पदो के रूप में हस्तान्तरित हुई है।अर्थात् सांगीतिक बन्दिशें अपने प्रारम्भिक रूपों ऋग्वेद, सामवेद (देव–स्तुति हेतु निर्मित स्त्रोत, भक्ति) से विकसित होते हुए प्रबन्ध, वस्तु ,रूपक के रूप में सामने आई जोकि, वर्तमान समय में ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी आदि अनेक बन्दिशीय रूपों के द्वारा हिन्दुस्तानी रागदारी संगीत में प्रचलित हुई। आक्षिप्तिका एक महत्वपूर्ण गीत प्रकार है जिसका उल्लेख भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। इसका स्वरूप वर्तमान भारतीय संगीत में प्रचलित बंदिशीय रूपों के समान है। यह भी स्वर–पद–ताल में निबद्ध संगीत रचना मानी गई है।

Hindustani Music- With the help of traditional “Bandishes”, This art has been able to remain alive even today. To make bandishes which can nicely display the form of “Raga” or are nice , the use of traditional bandishes is necessary. The traditional art of Music has been transferred to us in the form of lyrical pad or texts. Musical bandishes evolved and come forward from its initial forms. ‘Rigveda’, ‘Samveda’ (The source for making ‘Deva stuti’, devotion) to its latest forms Prabandh, Vastu and Rupak, which became popular in Hindustani Ragdari Music in form of various bandish forms such as Dhrupad, Khayal, Dhamar, Tappa,Thumari etc. ‘Akshiptika ‘ is one of the most important song type. It is also mentioned in India’s ancient texts. It is equal to the popular bandish forms of present day Indian music. It is also believed as Nibadha creation in swar-pad-taal.

मुख्य शब्द : आक्षिप्तिका, गीत, स्वर, पद, ताल, निबद्ध।
Akshiptika, Composition, Swar, Pad, Taal,Nibadha.

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से निबद्ध गीत प्रकारों के विभिन्न प्रकार के स्वरूप प्रचलन में रहे हैं। वैदिक संगीत की भक्तियों, ध्रुवा गीत , आक्षिप्तिका से लेकर मध्यकाल की प्रबन्ध–शैली से होती हुई बन्दिश की विकास यात्रा में ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी तक अनेक बंदिशीय रूपों के दर्शन होते हैं। विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए बन्दिश अपने वर्तमान रूप में अवस्थित हुई है। विभिन्न कालों में इसके नाम तथा स्वरूप में विविध परिवर्तन हुए हैं। 13 वीं शताब्दी में पण्डित शारंगदेव ने अपने ग्रंथ संगीत –रत्नाकर के रागविवेकाध्याय में रागों का विश्लेषण करते समय आक्षिप्तिका के उदाहरण दिए हैं। स्वर, पद तथा ताल में बद्ध रचना होने के कारण यह निबद्ध गान का एक प्रकार थी। यह एक सांगीतिक बंदिश थी जिसके पद संस्कृत और प्राकृत भाषा में हैं और प्रकृति सम्बन्धी या श्रृंगारिक विषयों से सम्बन्धित हैं।

हिन्दुस्तानी रागदारी संगीत में बन्दिश की संकल्पना का प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक विविध स्वरूपों में परिपोषण किया गया है। '' प्राचीन काल में राग तथा ताल में बद्ध पद–रचना को सामान्य रूप से ‘गीत’ कहा गया, जिसे वर्तमान में बन्दिश/गत कहा जाता है। मध्यकालीन ग्रन्थकार इसे निबद्ध गान के अन्तर्गत रखते हैं। ''(भारतीय संगीत में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान, डॉ० विजया चांदोरकर, पृष्ठ संख्या 2

हिन्दुस्तानी रागदारी संगीत में बन्दिश की संकल्पना राग–संकल्पना के समतुल्य ही प्रभाव रखती है। बन्दिश शब्द से ही उसमें अन्तर्निहित बाँधने की क्रिया या बन्धन का भाव स्पष्ट हो जाता है।

ताल के प्रथम बिन्दु से लेकर आवर्तन के अन्तिम बिन्दु तक जो रचना स्वर व पद के साथ धनुषाकार रूप में बांधी जाए अर्थात जिसमें कोई ढिलाई न हो , बल्कि कसाव हो, बन्दिश कहलाएगी। (मारूलकर डॉ0 अलका, मुक्त संगीत संवाद,)

श्री शान्ताराम कशालकर के शब्दों में ' बन्दिश एक जरिया मात्र नहीं है, उसका अपना एक चरित्र है,व्यक्तित्व है , जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

बन्दिश के द्वारा राग के अन्तःस्वरूप को एक रूप मिलता है, यानि उसकी आकृति स्पष्ट रूप से सामने आती है। अनेक बन्दिशों के द्वारा राग के विविध प्रकार से चलन की जानकारी भी होती है। कई पम्परागत बन्दिशें रागदारी संगीत की भव्यता तथा माधुर्य से ओत–प्रोत हैं।

आक्षिप्तिका शब्द "आक्षेप " (फेंकना, प्रकट करना) से बना है। आक्षिप्तिकाऐं प्रत्येक ग्राम–राग के अन्त में उदाहरण के रूप में दी गई हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्राचीन काल में बंदिशीय रूपों की स्थिति।

प्राचीन संगीत में निबद्ध गीत–प्रकारों का अध्ययन।

आक्षिप्तिका गीत प्रकार का अध्ययन।

शोध–प्रविधि

पुस्तकों एवम् ग्रन्थों का पठन–पाठन, शोध–पत्रों, जर्नल्स द्वारा ज्ञानवर्धन।

आक्षिप्तिकालक्षणम्

"चच्चत्पुटादितालेन मार्गत्रयविभूषिता।
आक्षिप्तिका स्वरपदग्रथिता कथिता बुधैः।।

अर्थात् बुद्धिमानों के द्वारा आक्षिप्तिका चच्चत्पुट आदि तालों के द्वारा तीन मार्गों से विभूषित तथा स्वर और पद से गुंथी हुई (निबद्ध गीति) कही गई है।

भिन्नकैशिक मध्यम

भिन्नकैशिक मध्यम ग्रामराग को पण्डित शारंगदेव द्वारा षड्जमध्यमा जाति से उत्पन्न माना गया है। इस राग में षड्ज स्वर को ग्रह और अंश दोनों माना है। मध्यम स्वर अथवा मन्द्र षड्ज स्वर को न्यास स्वर कहा है। यह प्रसन्नादि अलंकार से युक्त है और इसकी जाति संपूर्ण है और षड्जादि मूर्च्छना को धारण किए है। संचारी रूप में यह काकली से युक्त कहा गया है। सोम इसके देवता हैं। यह दिन के प्रथम प्रहर में गेय है। दानवीर, रौद्र और अद्भुत इसके रस हैं।

आलाप

सां निधा सामां। मम धम मम धम गामाधाधा नीधा सस सां गां माधानीधा सां सां धमा मगा स गास साधा मामा। सां गां माधानीसा सांसां मधा पमाप मामा।

वर्तनी

सस निध सस मम मध मग मध निमम। नीधांनीमधनिस। निधनिसंससंससंससंसं धध। मम गसं सं गमा सांग गधांधांधधममधंमगममधससंसं। संसंधमधपमापा। मामा।

बंदिश/रचना

बृहदुदरविकट गमनजठरवि भक्तंसुविपुल पीनांगं अरिदमनविषम लोचनंसुरनमि तंविनायकं वंदे।

1.	सा	सा	नी	धा	सा	सा	मा	मा
	बृ	ह	दु	द	र	वि	क	ट
2.	मा	धा	मा	गा	मा	धा	नी	मा
	ग	म	न	ज	ठ	र	वि	
3.	मा	नी	धा	नी	मा	धा	नी	नी
	भ	क्तं	सु	वि	पु	ल		
4.	नी	धा	नी	सा	सा	सा	सा	सा
	पी	नां	गं					
5.	मा	मसा	सा	सा	नी	धा	पा	पा
	अ	रि	द	म	न	वि	ष	म
6.	धा	नी	मा	मा	गा	रि	मा	मा
	लो	च	नं	सु	र	न	मि	
7.	मा	मा	मा	मा	धा	नी	मा	मा
	तं	वि	ना	य	कं			
8.	सा	सा	धा	नी	मा	मा	मा	मा
	वं	दे						

–इत्याक्षिप्तिका।

प्रस्तुत परिभाषा में दिए शब्दों को इस प्रकार सुस्पष्ट किया गया है–

चच्चत्पुटादितालेन

अर्थात् बन्दिश चच्चत्पुट व चाचपुट इत्यादि मार्ग–तालों में बँधी है। चच्चत्पुट सम व चाचपुट विषमताल है।

मार्गत्रयविभूषिता

यह चित्रा, वर्तिका व दक्षिण आदि तीन मार्गों से विभूषित है। चित्रा मार्ग में एक कला में दो मात्राऐं होती हैं। वर्तिका मार्ग में एक कला में चार मात्राऐं होती हैं। दक्षिण मार्ग में एक कला में आठ मात्राऐं होती हैं।

आक्षिप्तिकास्वरपदग्रथिता

यह स्वर और पद से गुंथी हुई कही गई है। अतः ग्रंथगत लक्षण से यह तो स्पष्ट ही है कि, यह स्वर,

पद और ताल से बँधी रचना है। इसलिए गीत का प्रकार है व 'मार्ग संगीत ' से सम्बद्ध है।

आक्षिप्तिका का एक उदाहरण

षड्ज–ग्राम राग

पण्डित शारंगदेव षड्ज–ग्राम राग की व्याख्या इस प्रकार करते हैं । इसे षड्ज–मध्यमा जाति से उत्पन्न (ग्राम) राग कहा है। तार षड्ज ग्रह और अंश दोनों ही है। न्यास स्वर मध्यम है तथा काकली निषाद व अंतर गांधार स्वरयुक्त हैं। यह एक सम्पूर्ण (जाति का) राग है। इसमें षड्जादि मूर्च्छना का प्रयोग होता है। इसमें अवरोही (वर्ण के) प्रसन्नांत अलंकार का व्यवहार होता है। गुरू (बृहस्पति) इसके देवता हैं। यह दिन के प्रथम प्रहर में गेय है। वीर, रौद्र और अद्भुत इसके रस हैं। षड्जग्राम नाम वाला यह ग्राम राग , वर्षा (ऋतु) में गायन योग्य है।

1.	रि	रि	ग	सा	ग	रि	ग	सा	
	स	ज	य	तु	भू		ता		
2.	नि	ध	प	प	रि	रि	ग	ध	
	धि	प	तिः	प	रि	क	र		
3.	ग	रि	सा	सा	सा	सा	सा	सा	
		–भो	गीं	द्र		कुं		ड	
4.	सा	सा	ग	धनि	नि	नि	नि	नि	
	ला		भ	र		णः			
5.	ग	रिग	ध	ध	ग	गरि	सा	सा	
	ग	ज	च			र्म	प	ट	नि
6.	नि	ध	प	प	रि	रि	प	प	
	व	स	नः		श	शां	क		
7.	नि	ध	नि	सा	सा	सा	सा	रिसारि	
	चू		ड़ा	म	णिः				
8.	प	ध	निध	प	म	म	म	म	
	शं				भुः				

आक्षिप्तिका के प्रस्तुत उदाहरण द्वारा स्पष्ट होता है कि, करण और वर्तनी, जोड़–शैली के साथ साम्यता रखते हुए राग का विस्तार करते हैं यथा नि़ सा नि़ध़ सा सा नि़ ध़ इत्यादि। इस अर्थ में पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा उल्लिखित सभी बन्दिशनुमा रचनाओं की तुलना आक्षिप्तिका से की जा सकती है।

कल्लिनाथ ने इसे निबद्ध गीत ही कहा है–

"आक्षिप्तकेति निबद्धगीतिभेदः।"

इसके नाम की सार्थकता उन्होंने इस प्रकार स्पष्ट की है–

"पदतालाद्याक्षिप्तत्वादाक्षिप्तिकेत्यन्वर्था"।

इस तरह आक्षिप्तिका ऐसा निबद्ध गीत है जिसकी स्वर–योजना में प्रयोज्य ग्राम–राग के सब लक्षण विद्यमान हों अर्थात् जो ग्राम–राग में बद्ध हो, ताल में बद्ध हो और पद से युक्त हो अर्थात् जो रचना स्वर–पद (साहित्य)–ताल से युक्त हो वह आक्षिप्तिका है। प्रयोज्य राग का आक्षेप कराने वाला गीत आक्षिप्तिका है । बंदिश की भी यही परिभाषा है , बन्दिश ऐसी रचना है जोकि राग–ताल –पद में बद्ध हो।

निष्कर्ष

आदिकाल से ही बन्दिश का स्वरूप किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है। स्वर, पद और ताल की सहायता से यह स्वरूप भारतीय संगीत –परम्परा को

आलाप

सां सां री गधगरेसा सांनिधपधधरेगसा।
री ग सा साग पनिधनिसा सा सा। गसारिगपधनिप मम।–
इत्यालापः।

करण

रीं रीं ग ध गरि सासा निंधपप।
रीं रीं ग ध परि सां सां सां सां ।
सां सां गनिध रीरीग। ध गरी सांसां
निधपप। री री प प निधनि सां सां सां ।
सारि सारि पध निध , पमम म म – इति करणम्।

बन्दिश/रचना

सजयतु भूताधिपतिः परिकर भोगीन्द्र कुंडला भरणः गजचर्म पटनिवसनः शशांक चूड़ामणिः शंभुः।।

–इत्याक्षिप्तिका।

निरन्तर आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में ग्राम–राग के अन्त में उल्लिखित आक्षिप्तिकाओं को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि, प्राचीन समय से ही निबद्ध गीत रचना का पर्याप्त प्रचार रहा है। अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, स्वर, साहित्य एवम् –लय ताल द्वारा सुबद्ध आक्षिप्तिका को निबद्ध गीत का ही एक पर्याय माना जा सकता है। निबद्ध गीत रचना के अनिवार्य तत्व इसमें सरलतापूर्वक देखे जा सकते हैं।

जिस प्रकार निबद्ध गीत–रचना के सभी अंगों को विशिष्ट राग–ताल में बद्ध किया जाना अपेक्षित है उसी प्रकार आक्षिप्तिका भी स्वर–ताल व राग बद्ध रचना के रूप मे प्रयुक्त की गई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *.शास्त्री.एस.एस ,संगीत रत्नाकर, अड़्यार संस्करण, द्वितीय रागविवेकाध्याय, Vol II, श्लोक संख्या 27–29. (1943), अड़्यार लाइब्रेरी प्रैस।*
2. *कल्लिनाथ,संगीत रत्नाकर (टीका), अड़्यार संस्करण, Vol II, अड़्यार लाइब्रेरी प्रैस।*
3. *चौधरी डॉ० सुभद्रा, भारतीय संगीत में निबद्ध, राधा पब्लिकेशन्स, दरियागन्ज, नई दिल्ली।*

4. भटनागर डॉ० मधुरलता, भारतीय संगीत का सौन्दर्य–विधान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
5. परांजपे श्रीधर डॉ० शरच्चनद्र, भारतीय संगीत का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. चांदोरकर डॉ० विजया, भारतीय संगीत में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
7. डॉ0 मारूलकर देव अलका, मुक्त संगीत सम्वाद,गानवर्धन संस्था, पुणे।
8. कशालकर श्री शांताराम, संगीत पत्रिका, जून अंक 2001, संगीत कार्यालय, हाथरस.
9. Tyagi Prof. Manjusree ,Significance of compositional forms in Hindustani classical music, (1997), Pratibha Publication,Delhi
10. Sarangdev, translated by Shringy Ravindra K, Sangita-Ratnakara of Sarangdev: Sanskrit text and English Translation with Comments and Notes, Vol. 1, Ed. (1978), Sharma Prem Lata, Motilal Banarsidass.